वैश्वीकरण एवं भारतीय संगीत कला

डॉ० अनिता रानी
असिसटेंट प्रोफेसर संगीत विभाग
बी०डी० जैन गर्ल्स पी०जी० कालेज आगरा।

संसार में जितनी भी विधाएँ एवं कलाएँ है, उन सभी में संगीत कला का स्थान सर्वश्रेष्ठ है क्योकि प्रत्येक क्षेत्र का मनुष्य स्वान्त: सुखाय संगीत की शरण चाहता है। यह लौकिक तथा परालौकिक, दोनो ही सुखों को प्रदान करने वाला, तन्त्र–मंत्र की मूल शक्ति तथा बह्म का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप है। संगीत के द्वारा मानव में सौन्दर्य के प्रति संवेदन शीलता का विकास होता है जिससे उसमें सांस्कृतिक परिश्कार आता है। संगीत एक ऐसा आधारभूत ज्ञान है जिसके चारों ओर ज्ञान की अन्य शाखायें विकसित हुई है। संगीत में इतनी शक्ति है कि श्रोता रसमग्न होकर सांसारिक मोह को भूलकर कल्पना के सागर में झूमने लगता हैं। इसी काल्पनिक स्वरूप को साकार करने की क्षमता रखती है कला। मन का कलेश और दुनिया के समस्त अवसाद उन क्षणों में घुलकर धुल जाते है, और जब इस कला–लोक की समाधि में चेतना का उत्थान होता है तो व्यक्ति अपने को तरोताजा महसूस करता है। कपड़े पर छपा हुआ हाथी, वास्तविक हाथी नही होता, यह जानते हुए भी वह मनुष्य को सुख देता है। कला की यही शक्ति मिथ्यात्व को जन्म देती है और इस प्रकार विद्या से अविद्या जन्म–मरण की श्रृंखला चलती रहती है, संगीत को एक सार्वभौम भाषा माना जाता है। चाहे आप भारत में ओपेरा संगीत सुने या अमेरिका में राग–मालकौस कोई भी अन्तर नही पड़ेगा, क्योकि उसमें मात्र संगीत है। किसी देश या भाषा से सम्बन्ध मानकर उस संगीत का सही रसास्वादन नही किया जा सकता। डॉ० मधुरलता भटनागर के शब्दों में जिस प्रकार सुगन्ध अपना वातावरण बना लेती है, उसी प्रकार संगीत कला भी अपना वातावरण सृजित कर लेती है। संगीत और सुगंध दोनों से प्राप्त आनंद की व्याख्या करना कठिन है।

आज सारा विश्व वैश्वीकरण के इस दौर में सांस ले रहा है। आज भारतीय संस्कृति विश्व में अपनी एक नई पहचान बनाने की ओर अग्रसर है तो इसका मुख्य कारण है हमारा संचार–माध्यम। वै वीकरण के इस युग में संचार–माध्यमो ने भारतीय संस्कृति को इसके आदर्शो को विश्व से परिचित कराया है। वर्तमान युग में शिक्षा का क्षेत्र चाहे कोई भी हो सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र, ऐसा माध्यम है जो समूचे विश्व को उपग्रह के माध्यम से जोड़ता है। वर्तमान समय में शास्त्रीय संगीत को राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर चिन्हांकित करने तथा समाज के जनमानस में संगीत विषय की सफल सार्थकता को प्रमाणित करने तथा संगीत विषय को समुचित संरक्षण प्रदान करने हेतु प्रचार–प्रसार माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वैश्वीकरण के इस युग में विज्ञान एवं तकनीकी विकास के साथ–साथ मानव जीवन में ह्रदयगत भावनाओं का स्थान मस्तिष्क की जटिलताओं ने ले लिया है। अतएव प्रगतिपथ पर सतत गतिमान रहने की महत्वकांक्षा ने जहाँ सुविधा, आविष्कार, सूचना, प्रौद्योगिकी, विकास, प्रयोग, बहुकुशलता, तकनीकी ज्ञान, समय, श्रम व ऊर्जा की बचत हेतु संसाधन तो दिए ही है, साथ ही साथ अनियमित जीवन शैली, तनावजनित बढते मानसिक रोग, अर्धविकसित सुविधाभोगी, मानव, आलस्य, अनिन्द्रा, अर्थ के सम्मुख संवेदना व रिश्तों की उपेक्षा प्रर्यावरण प्रदूषण की सौगात भी प्रदान की है। जिनके निवारण हेतु समयोजित प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। संगीतादि कलाओं के आश्रय से वर्तमान परिदृश्य को परिवर्तित किया जा सकता है।

आज का मानव वैश्वीकरण के इस युग में संशय की स्थिति में खड़ा है। वर्तमान संगीत क्या है ? बीसवी सदी के अन्तिम चरण में भारतीय संगीत का चेहरा जितनी तीव्र गति से बदला है, वह गति और परिवर्तन दोनों चौंकाने वाली बात है। बदलते वक्त में परिवर्तन को आत्मसात् करना सहज प्रक्रिया है, लेकिन सांस्कृतिक बदलाव का दौर पुरानी समृद्धि को ही निगलने लगे तो क्या कहेगें। नब्बे का दशक शुरू होने पर बाजार में खुलापन आया और भूमंडलीकरण शुरू हुआ, जिसके साथ ही मानवीय उद्यम के कई क्षेत्रों में खासकर कला का ह्रास होने लगा। आज बाजारवाद देश हावी है तो भला संगीत इससे कैसे अछूता रह सकता है हमारी संगीतकला–संस्कृति पर पहले की तुलना में आज कई गुना ज्यादा खतरे मंडरा रहे है जिस जमीन पर ये कलाएँ पनपी, आर्थिक उदारीकरण की आंधी उसे तेजी से निगल रही है। सांस्कृतिक रूप से न तो हम परम्परावादी सामन्ती जकडन से मुक्त हुए और न आर्थिक सुधार में जमी विकृतियों से बचा पा रहे है। इन दोनों पाटो के बीच फसे है हम। भारतीय समाज में आ रहे इन परिवर्तनों की जड़ बीसवी सदी के अन्त में किए गए आर्थिक सुधार और संचार क्रान्ति में है। इस बात में कुछ सीमा तक सच्चाई भी है। किन्तु गौर करने की बात इससे भी आगे जाती है यह ठीक है कि संचार परिवर्तन का उपादान कारण भूमण्डलीकरण है। ब्लैक बेल डिक्सनरी ऑफ सोशियोलॉजी के अनुसार –भूमण्डलीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न समाज के सामाजिक जीवन, राजनीति और व्यापारिक क्षेत्र से लेकर संगीत वेष–भूशा व जन मीडिया के क्षेत्रों

तक अर्न्तराश्ट्रीयस्तर पर अत्यन्त द्रुतगति से प्रभावित हुआ है। भूमण्डलीकरण परिवेश में समकालीन कला सृजन प्रक्रिया में नित्य परिर्वतन हो रहा है।

संगीत कला की सम्पेषण क्षमता ने ही आज वैश्विक परिदृश्य में संगीत को महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। विभिन्न देशों में सामूहिक संगीत प्रस्तुतियों से विश्व–बंधुत्व की भावना का प्रसार होता है। वैश्विक स्तर पर सुना व देखा जाने वाला संगीत ही ग्लोबल संगीत है। संगीत तो जबसे उत्पन्न हुआ है तब से यह एक वैश्विक कला है। संगीत चाहे भारतीय हो, पा चात्य हो या प्राच्य उसमें सुर सात ही माने जाते है।ग्लोबल विश्व में संगीत का पुरातन रूप भाास्त्रीय संगीत है। पश्चिमी देश आज जिस वैश्वीकरण पर जोर दे रहा है, वह भारत में वसुदैव कुटुम्बकम की मूल भावना से अनुप्रेरित है। संगीत कला इस भावना के विकास से अत्यधिक सहायक सिद्ध हो रहा है। आज के इस वश्वीकरण में हम प चमी कला से बहुत अधिक प्रभावित हो रहे है। वश्वीकरण के इस दौर ने पूरी दुनिया में एक नयी क्रान्ति ला दी है।

आज भारतीय संगीत के पटल पर जो शब्द सर्वाधिक सुनाई दे रहा है वह है पाश्चात्य संगीत। मेरी परिभाषा के अनुसार, यह वह संगीत है जो वैश्विक स्तर पर सुना जाता है और जिसका उत्पादन–प्रकाशन और विवरण संगीत से सम्बंधित उद्योगों से होता है। पाश्चात्य संगीत वैश्वीकरण नियमों के अंकुश में है। जो पाश्चात्य उत्पादक होते है वे यही संगीत चवदेवत करते हैं और इनमें बाजार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जो कि विभेदीकृत है। बीसवी भाताब्दी में भारतीय संगीत की सभी प्रवृत्तियॉ उभरी है। शास्त्रीय परम्परा के साथ लोक–संगीत, फिल्म–संगीत, नाट्य–संगीत, सुगम–संगीत, विशेष रूप से हिन्दुस्तानी संगीत में भारी परिवर्तन हुए है, इन बदली हुई परिस्थितियों में जो कलाकार सामने आ रहे है, उनकी गायन शैली भी बदली हुई है। संगीत से सम्बंधित वैश्विक स्तर पर पॉच मुख्य कम्पनियॉ है, जो संगीत का वितरण कर रही है– यूनीवर्सल, सोनी, ई0 एम0 आई0, बी0 एम0 जी0 और बार्नर। बहुत सारी भारतीय कम्पनियॉ साझा कार्यक्रम बाह्य कम्पनियों के साथ बना रही है। हम कुल संगीत का अवलोकन करे तो पायेगे कि 79 प्रतिशत संगीत सम्मिश्रित संगीत रहा, जबकि मौलिक संगीत केवल 19 प्रतिशत रहा।

वैश्वीकरण के इस युग में सबसे बड़ा बदलाव तो ये किया है कि भारतीय संगीतकार बड़ी आडियंस के लिए कार्य करने लगे है। दुनिया भर में आज संगीत की इज्जत है। यूरोप और अमेरिका की यूनिवर्सिटीज में हिन्दुस्तानी संगीत के विभाग बन रहे है और कई स्तरों पर इसका अध्ययन किया जा रहा है। पश्चिम के संगीतकार भाास्त्रीय संगीत की बारीकियॉ समझने में दिलचस्पी ले रहे है और उसके साथ प्रयोग भी कर रहे है। देखते ही देखते पं0 रवि ांकर, उ0 अली अकबर खॉ और उ0 जाकिर हुसैन जैसे संगीतकार ग्लोबल हो गये है। आज भारतीय गायक, वादक, नर्तक दुनिया के हर कोने मं परफार्म करने जाते है और वाह–वाही लूटते है।

आज के वैज्ञानिक युग में इलेक्ट्रोनिक्स टेक्नोलॉजी की नित्य प्रति नवीन से नवीन एवं अत्याधुनिक इलेक्ट्रोनिक ध्वन्यकन उपकरणों ने संगीत की अपार सहायता की है। आज हम इन्ही उपकरणों की सहायता से अपने संगीत को संग्रहीत भी कर सकते है, और पुनः जब चाहे सुन भी सकते है। आज इलेक्ट्रोनिक्स तकनीकी के माध्यम में तानपुरा व तबला जैसे वाद्यों की सजीव आवाज भी उपलब्ध हो गई है। सिंथसाइजर ने तो सैकडों वाद्य यन्त्रों को एक ही की–बोर्ड पर संभव बनाकर चमत्कार कर दिया है। इस तरह संगीत के क्रियात्मक तथा शास्त्रपक्ष को समृद्ध बनाने में संचार माध्यमों ने अहम भूमिका निभाई है। रूकमणि देवी कला के विषय में कहते है कि कोई भी कला अप्रासंगिक होकर जीवित नही रह सकती। वह युग धर्म का प्रभाव ग्रहण करती हुई परिवर्तन के उतार–चढ़ाव, अपकर्ष, उन्नति–अवनति के फलस्वरूप मात्र बाह्य कलेवर बदलकर, प्रासंगिक होती चलती है लेकिन अपना आत्यिक सौन्दर्य नही खोती। भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा इसका ज्वलंत प्रभाव है। पं0 रविन्द्रनाथ टैगोर ने भी कला एवं अन्य ललित कलाओं के विषय में कहा था कि "भावनाओं की अभिव्यक्ति इन्ही के माध्यम से होती है, अतः इन्हे किसी भी कीमत पर विकृत नही किया जाना चाहिए।

जहॉ तक बदलाव की वयार की बात है तो इसे तो कोई रोक नही सकता। संगीत एक ऐसी भाषा है जो सच्चे अर्थो में पाश्चात्य है इसलिए इसमें इतने प्रयोग हो रहे हैं क्योकि इसमें प्रयोग करने की असीम संभावनाऐं है। बस देखना यह कि वैश्विकरण की इस रेस में भारतीय संगीत अपनी पहचान ना खो दे। भारतीय संगीत की मूल आत्मा इसमें बसी रहे, बस यह जिम्मा आज के संगीतकार उठा लें तो यह भारतीय संगीत की सबसे बड़ी सेवा होगी।

सन्दर्भ सूची :–

भारतीय संगीत का सौन्दर्य विधान– मधुरलता भटनागर
आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत– डॉ0 हुकुमचन्द
भारतीय संगीत–शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर– डॉ0 मधुवाल सक्सैना
लोकमान और मध्यकालीन पंजाबी साहित्य– करनैल सिंह पदम्
संगीत मासिक पत्रिका
संगीत कला विहार
छायानट